

छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का एक अध्ययन

*डॉ. शेख आतिफ

अतिथि व्याख्याता (इतिहास) उच्च शिक्षा विभाग रायपुर (छ.ग.)

Article Received: 21 August 2026

*Corresponding Author: डॉ. शेख आतिफ

Article Revised: 09 September 2026

अतिथि व्याख्याता (इतिहास) उच्च शिक्षा विभाग रायपुर (छ.ग.)

Published on: 29 September 2026

DOI: <https://doi-doi.org/101555/ijrpa.3015>

सारांश

छत्तीसगढ़ अपनी समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक विरासत के कारण भारत के महत्वपूर्ण पर्यटन क्षेत्रों में स्थान रखता है। राज्य में प्राचीन मंदिरों, पुरातात्विक अवशेषों, ऐतिहासिक दुर्गों, शैलचित्रों तथा धार्मिक-सांस्कृतिक स्थलों की विविधता देखने को मिलती है। सिरपुर, राजिम, मल्हार, ताला, रतनपुर, भोरमदेव, दंतेवाड़ा तथा बारसूर जैसे स्थल छत्तीसगढ़ के इतिहास और सांस्कृतिक विकास के महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य छत्तीसगढ़ के प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक महत्त्व, पर्यटन क्षमता तथा स्थानीय सामाजिक-आर्थिक विकास में उनके योगदान का अध्ययन करना है। अध्ययन में ऐतिहासिक एवं द्वितीयक स्रोतों के साथ-साथ आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय अवलोकन एवं स्थानीय स्तर से प्राप्त जानकारी का उपयोग किया जा सकता है। अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का संरक्षण, प्रचार-प्रसार तथा आधारभूत पर्यटन सुविधाओं का विकास राज्य में पर्यटन को किस प्रकार बढ़ावा दे सकता है। साथ ही, विरासत संरक्षण और सतत पर्यटन विकास के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता को भी रेखांकित किया गया है। यह अध्ययन छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण, पर्यटन विकास तथा स्थानीय समुदायों की भागीदारी के लिए उपयोगी आधार प्रदान कर सकता है।

प्रमुख शब्द: छत्तीसगढ़, ऐतिहासिक पर्यटन, पर्यटन स्थल, पुरातात्विक विरासत, सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक धरोहर, विरासत संरक्षण।

परिचय

छत्तीसगढ़ भारत के मध्य भाग में स्थित एक ऐसा राज्य है, जिसकी पहचान प्राकृतिक संपदा के साथ-साथ समृद्ध ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत से भी होती है। राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्राचीन काल से जुड़ी हुई है और विभिन्न राजवंशों, धार्मिक परंपराओं तथा लोक-संस्कृतियों के विकास ने यहाँ अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों को जन्म दिया है। मंदिर, प्राचीन नगरों के अवशेष, दुर्ग, शिलालेख, मूर्तिकला, शैलचित्र तथा पुरातात्विक संरचनाएँ छत्तीसगढ़ के गौरवशाली अतीत को प्रदर्शित करती हैं।

छत्तीसगढ़ में सिरपुर, मल्हार, ताला, राजिम, रतनपुर, भोरमदेव, बारसूर और दंतेवाड़ा आदि प्रमुख ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थल हैं। सिरपुर प्राचीन धार्मिक एवं पुरातात्विक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जबकि मल्हार और ताला की पुरातात्विक विरासत प्राचीन स्थापत्य एवं मूर्तिकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। रतनपुर का संबंध छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक राजनीतिक विकास से रहा है तथा भोरमदेव अपने मंदिर स्थापत्य के कारण विशेष पहचान रखता है। इसी प्रकार बस्तर क्षेत्र के बारसूर और दंतेवाड़ा जैसे स्थल ऐतिहासिक, धार्मिक एवं स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़े हुए हैं। ऐतिहासिक पर्यटन केवल मनोरंजन या भ्रमण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों को इतिहास, संस्कृति और विरासत से परिचित कराने का महत्वपूर्ण माध्यम है। ऐतिहासिक पर्यटन के माध्यम से किसी क्षेत्र की स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता है तथा परिवहन, आवास, हस्तशिल्प, स्थानीय बाजार और अन्य सेवा क्षेत्रों में रोजगार के अवसर विकसित हो सकते हैं। इसके साथ ही स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने में भी पर्यटन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

हालाँकि, अनेक ऐतिहासिक स्थलों के समुचित संरक्षण, प्रचार-प्रसार, पर्यटक सुविधाओं, पहुँच, स्वच्छता, सूचना व्यवस्था तथा स्थानीय सहभागिता से संबंधित चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। इसलिए छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का व्यवस्थित अध्ययन आवश्यक है, जिससे उनकी ऐतिहासिक महत्ता, वर्तमान पर्यटन स्थिति, संभावनाओं तथा संरक्षण की आवश्यकताओं को समझा जा सके। प्रस्तुत अध्ययन "छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का एक अध्ययन" के माध्यम से राज्य के चयनित ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक महत्त्व, पर्यटन सुविधाओं, पर्यटक आकर्षण तथा स्थानीय विकास में उनकी भूमिका का अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

अध्ययन की आवश्यकता

छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की पर्याप्त संभावनाएँ होने के बावजूद इन स्थलों के व्यवस्थित अध्ययन और संरक्षण की आवश्यकता बनी हुई है। प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता निम्नलिखित आधारों पर स्पष्ट की जा सकती है—

1. ऐतिहासिक विरासत की पहचान

छत्तीसगढ़ के विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक विशेषताओं को व्यवस्थित रूप से समझना आवश्यक है, ताकि राज्य की विरासत का उचित दस्तावेजीकरण किया जा सके।

2. पर्यटन विकास की संभावनाओं का अध्ययन

राज्य के ऐतिहासिक स्थलों में पर्यटन विकास की संभावनाओं का अध्ययन करके यह समझा जा सकता है कि किन क्षेत्रों में पर्यटन सुविधाओं एवं आधारभूत संरचनाओं के विकास की आवश्यकता है।

3. विरासत संरक्षण

प्राचीन मंदिरों, मूर्तियों, शिलालेखों और अन्य पुरातात्विक अवशेषों का संरक्षण आवश्यक है। अध्ययन से संरक्षण की वर्तमान स्थिति तथा उससे संबंधित समस्याओं को समझने में सहायता मिल सकती है।

4. स्थानीय रोजगार एवं अर्थव्यवस्था

ऐतिहासिक पर्यटन स्थानीय लोगों के लिए होटल, परिवहन, गाइड सेवा, हस्तशिल्प, स्थानीय उत्पाद एवं अन्य पर्यटन आधारित गतिविधियों में रोजगार के अवसर उत्पन्न कर सकता है। इसलिए इसके स्थानीय आर्थिक प्रभाव का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

5. सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण

ऐतिहासिक स्थल स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक स्मृतियों से जुड़े होते हैं। पर्यटन के माध्यम से इन सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण और प्रचार को बढ़ावा दिया जा सकता है।

6. पर्यटक सुविधाओं का मूल्यांकन

पर्यटकों के लिए सड़क, परिवहन, आवास, भोजन, स्वच्छता, पेयजल, सूचना केंद्र, पार्किंग तथा सुरक्षा जैसी सुविधाओं की उपलब्धता पर्यटन अनुभव को प्रभावित करती है। इन सुविधाओं का अध्ययन आवश्यक है।

7. स्थानीय समुदाय की भागीदारी

सतत ऐतिहासिक पर्यटन के लिए स्थानीय समुदाय की सहभागिता महत्वपूर्ण है। अध्ययन से यह समझने में सहायता मिल सकती है कि स्थानीय लोग पर्यटन गतिविधियों में किस प्रकार शामिल हैं और उनकी क्या अपेक्षाएँ हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ के प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं महत्त्व का अध्ययन करना।
2. चयनित ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की पुरातात्विक एवं स्थापत्य विशेषताओं का अध्ययन करना।
3. ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्त्व का अध्ययन करना।
4. इन पर्यटन स्थलों पर उपलब्ध पर्यटन संबंधी आधारभूत सुविधाओं का अध्ययन करना।
5. ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की ओर पर्यटकों को आकर्षित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना।
6. ऐतिहासिक पर्यटन के माध्यम से स्थानीय रोजगार एवं आर्थिक गतिविधियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
7. ऐतिहासिक पर्यटन के विकास में स्थानीय समुदाय की भूमिका एवं सहभागिता का अध्ययन करना।
8. ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण एवं रखरखाव की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।

छत्तीसगढ़ का परिचय

छत्तीसगढ़ भारत के मध्य-पूर्वी भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण राज्य है। इसका गठन 1 नवंबर 2000 को मध्य प्रदेश से अलग होकर हुआ। राज्य की राजधानी रायपुर है। छत्तीसगढ़ अपनी समृद्ध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, जनजातीय एवं प्राकृतिक विरासत के लिए जाना जाता है।

1. भौगोलिक स्थिति

छत्तीसगढ़ का क्षेत्रफल लगभग 1,35,192 वर्ग किलोमीटर है। राज्य की सीमाएँ मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड, ओडिशा, महाराष्ट्र और तेलंगाना से लगती हैं। राज्य का अधिकांश भाग पठारी एवं मैदानी भू-भाग से बना है। यहाँ मैदानी क्षेत्रों के साथ-साथ पहाड़ियाँ, वन और नदी घाटियाँ भी पाई जाती हैं।

2. प्राकृतिक स्वरूप

छत्तीसगढ़ में महानदी, शिवनाथ, हसदेव, अरपा, इंद्रावती और पैरी जैसी प्रमुख नदियाँ बहती हैं। राज्य में पर्याप्त वन क्षेत्र है और बस्तर तथा सरगुजा क्षेत्र प्राकृतिक विविधता के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। जलप्रपात, गुफाएँ, पहाड़ियाँ और वन क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से आकर्षण का केंद्र हैं।

3. ऐतिहासिक महत्व

छत्तीसगढ़ का इतिहास प्राचीन दक्षिण कोसल क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। विभिन्न कालों में यहाँ अनेक राजवंशों का प्रभाव रहा। सिरपुर, रतनपुर, मल्हार, ताला, राजिम, भोरमदेव और बारसूर जैसे स्थान राज्य की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक विरासत को दर्शाते हैं।

4. सांस्कृतिक एवं जनजातीय विविधता

छत्तीसगढ़ में अनेक जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। गोंड, मुरिया, हल्बा, बैगा, भतरा और कमार आदि समुदायों की अपनी विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराएँ हैं। लोकनृत्य, लोकगीत, हस्तशिल्प, मेले और पारंपरिक उत्सव राज्य की सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध करते हैं।

5. पर्यटन की दृष्टि से महत्व

छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक, धार्मिक, प्राकृतिक, जनजातीय और सांस्कृतिक पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ हैं। ऐतिहासिक पर्यटन की दृष्टि से सिरपुर, रतनपुर, मल्हार, ताला, भोरमदेव और बारसूर जैसे स्थल विशेष महत्व रखते हैं। "छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का एक अध्ययन" विषय के लिए राज्य का यह भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिचय अध्ययन की पृष्ठभूमि के रूप में उपयोग किया जा सकता है।



चित्र क्रमांक -1 छ.ग. ऐतिहासिक मैप व्यू

अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन का अध्ययन क्षेत्र **छत्तीसगढ़ राज्य** है। अध्ययन में राज्य के प्रमुख ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों को शामिल किया जा सकता है। छत्तीसगढ़ के विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए अध्ययन के लिए निम्न प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का चयन किया जा सकता है—

क्र.	ऐतिहासिक पर्यटन स्थल	जिला	प्रमुख विशेषता
1	सिरपुर	महासमुंद	प्राचीन बौद्ध, हिंदू एवं जैन पुरातात्विक विरासत
2	राजिम	गरियाबंद	प्राचीन मंदिर एवं धार्मिक-सांस्कृतिक विरासत
3	मल्हार	बिलासपुर	प्राचीन पुरातात्विक अवशेष एवं मूर्तिकला
4	ताला	बिलासपुर	देवरानी-जेठानी मंदिर एवं प्रसिद्ध मूर्तिकला
5	रतनपुर	बिलासपुर	प्राचीन राजधानी एवं धार्मिक-ऐतिहासिक विरासत
6	भोरमदेव	कबीरधाम	प्राचीन मंदिर स्थापत्य एवं मूर्तिकला

अध्ययन स्थलों का चयन निम्न आधारों पर किया जा सकता है—

- ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्त्व
- धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व
- पर्यटकों की उपस्थिति
- पर्यटन विकास की संभावनाएँ
- स्थानीय समुदाय की सहभागिता
- स्थल पर उपलब्ध पर्यटन सुविधाएँ
- संरक्षण एवं रखरखाव की स्थिति

प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र: यदि यह शोध-पत्र/लघु शोध है, तो सिरपुर, रतनपुर, ताला, मल्हार, भोरमदेव और बारसूर जैसे 6 प्रमुख स्थलों को नमूना क्षेत्र के रूप में लेकर विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन किया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों से संबंधित साहित्य का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि राज्य की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत पर इतिहास, पुरातत्त्व, पर्यटन तथा संस्कृति के विभिन्न दृष्टिकोणों से कार्य किया गया है। उपलब्ध साहित्य में प्राचीन नगरों, मंदिर स्थापत्य, पुरातात्विक

अवशेषों, धार्मिक परंपराओं तथा पर्यटन विकास से संबंधित विषय प्रमुख रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य की समीक्षा निम्न प्रकार से की जा सकती है।

1. सिरपुर की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक विरासत

सिरपुर छत्तीसगढ़ के प्रमुख ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलों में माना जाता है। विभिन्न पुरातात्विक अध्ययनों में सिरपुर के मंदिरों, बौद्ध विहारों, प्राचीन मूर्तियों तथा स्थापत्य अवशेषों का उल्लेख मिलता है। इन अध्ययनों से संकेत मिलता है कि सिरपुर केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि प्राचीन नगरीय एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के अध्ययन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। सिरपुर से प्राप्त पुरातात्विक अवशेष छत्तीसगढ़ की प्राचीन सांस्कृतिक विविधता को समझने में सहायक हैं।

2. मल्हार का पुरातात्विक महत्त्व

मल्हार को छत्तीसगढ़ के महत्वपूर्ण प्राचीन पुरातात्विक स्थलों में शामिल किया जाता है। मल्हार से प्राप्त प्राचीन मंदिरों, मूर्तियों, सिक्कों तथा अन्य अवशेषों पर किए गए अध्ययनों में इसके ऐतिहासिक विकास एवं सांस्कृतिक महत्त्व को रेखांकित किया गया है। उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि मल्हार क्षेत्र प्राचीन काल में धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र रहा होगा। इसके बावजूद पर्यटन की दृष्टि से इसके व्यापक प्रचार-प्रसार और पर्यटक सुविधाओं पर अपेक्षाकृत अधिक क्षेत्रीय अध्ययन की आवश्यकता दिखाई देती है।

3. ताला की स्थापत्य एवं मूर्तिकला

ताला के देवरानी-जेठानी मंदिर और वहाँ प्राप्त मूर्तिकला छत्तीसगढ़ की प्राचीन स्थापत्य परंपरा का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। पुरातात्विक साहित्य में ताला की प्रतिमाओं, मंदिर स्थापत्य तथा शिल्पकला की विशिष्टताओं का वर्णन मिलता है। विशेष रूप से ताला की मूर्तिकला भारतीय कला एवं स्थापत्य के अध्ययन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। पर्यटन अध्ययन के संदर्भ में इन ऐतिहासिक विशेषताओं को स्थानीय पर्यटन, विरासत संरक्षण और पर्यटक अनुभव से जोड़कर अध्ययन करने की आवश्यकता है।

4. रतनपुर का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व

रतनपुर छत्तीसगढ़ के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐतिहासिक साहित्य में इसे प्राचीन राजवंशों तथा क्षेत्रीय राजनीतिक गतिविधियों से संबंधित महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ स्थित महामाया मंदिर सहित अन्य धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल इसे महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र बनाते हैं। उपलब्ध साहित्य मुख्यतः इसके ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व पर केंद्रित है, जबकि पर्यटन

सुविधाओं, स्थानीय अर्थव्यवस्था और पर्यटकों की धारणा के संदर्भ में क्षेत्रीय अध्ययन की पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

5. भोरमदेव मंदिर और सांस्कृतिक पर्यटन

भोरमदेव मंदिर अपनी स्थापत्य शैली, मूर्तिकला तथा ऐतिहासिक महत्त्व के कारण छत्तीसगढ़ के प्रमुख विरासत स्थलों में शामिल है। मंदिर परिसर से संबंधित अध्ययनों में इसकी स्थापत्य एवं कलात्मक विशेषताओं को प्रमुखता दी गई है। भोरमदेव को प्रायः छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत के महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में देखा जाता है। पर्यटन के संदर्भ में यह स्थल धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ विरासत एवं स्थापत्य पर्यटन की संभावनाएँ भी प्रस्तुत करता है।

6. बस्तर क्षेत्र के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल

बस्तर क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत पर किए गए अध्ययनों में स्थानीय जनजातीय संस्कृति, धार्मिक परंपराओं, लोककलाओं, मंदिरों तथा पारंपरिक जीवनशैली को विशेष महत्त्व दिया गया है। बारसूर, दंतेवाड़ा तथा आसपास के क्षेत्रों में स्थित ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल बस्तर की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को प्रदर्शित करते हैं। साहित्य से यह भी स्पष्ट होता है कि बस्तर में पर्यटन को केवल ऐतिहासिक स्थलों तक सीमित न रखकर स्थानीय संस्कृति एवं समुदाय के साथ जोड़कर समझने की आवश्यकता है।

7. छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक एवं विरासत पर्यटन

पर्यटन संबंधी अध्ययनों में सांस्कृतिक एवं विरासत पर्यटन को स्थानीय संस्कृति, इतिहास, कला, स्थापत्य और परंपराओं से जोड़कर देखा गया है। छत्तीसगढ़ की विविध सांस्कृतिक विरासत राज्य को विरासत पर्यटन के विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। साहित्य में पर्यटन से रोजगार, स्थानीय बाजार, हस्तशिल्प और सेवा क्षेत्र में संभावित आर्थिक गतिविधियों की चर्चा मिलती है। हालांकि, ऐतिहासिक स्थलों पर पर्यटन के वास्तविक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का स्थल-विशिष्ट अध्ययन अभी भी महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र है।

8. ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण से संबंधित अध्ययन

उपलब्ध साहित्य में ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया है। प्राकृतिक क्षरण, मानवीय हस्तक्षेप, रखरखाव की कमी, अतिक्रमण तथा पर्यटक गतिविधियों से विरासत स्थलों के संरक्षण से संबंधित चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए पर्यटन विकास के साथ संरक्षण व्यवस्था, स्थानीय भागीदारी और सतत पर्यटन की अवधारणा को जोड़ना आवश्यक माना जाता है।

शोध-पद्धति

प्रस्तुत शोध “छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का एक अध्ययन” का उद्देश्य राज्य के प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक एवं पर्यटन संबंधी विशेषताओं का अध्ययन करना है। इसके साथ ही इन स्थलों पर उपलब्ध पर्यटन सुविधाओं, संरक्षण की स्थिति, पर्यटकों के अनुभव तथा स्थानीय समुदाय पर पर्यटन के प्रभाव को समझने का प्रयास किया जाएगा। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया जा सकता है।

1. शोध का स्वरूप

यह अध्ययन मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का होगा। अध्ययन में चयनित ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों की वर्तमान स्थिति का वर्णन करने के साथ-साथ पर्यटन विकास से संबंधित विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जाएगा।

2. अध्ययन की जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में मुख्यतः निम्न वर्गों को शामिल किया जा सकता है—

1. चयनित ऐतिहासिक स्थलों पर आने वाले पर्यटक।
2. स्थानीय निवासी।
3. स्थानीय दुकानदार एवं पर्यटन से जुड़े व्यवसायी।
4. पर्यटन/स्थल प्रबंधन से जुड़े कर्मचारी।
5. स्थानीय गाइड एवं अन्य पर्यटन सेवा प्रदाता।

3. नमूना चयन

अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन द्वारा प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों का चयन किया जा सकता है। पर्यटकों एवं स्थानीय निवासियों के लिए आवश्यकता के अनुसार सुविधाजनक/यादृच्छिक नमूना चयन का उपयोग किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया जा सकता है—

उत्तरदाता वर्ग	प्रस्तावित संख्या
पर्यटक	150
स्थानीय निवासी	100
पर्यटन व्यवसायी/गाइड	30
पर्यटन/स्थल प्रबंधन से जुड़े व्यक्ति	20
कुल	300

5. प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक आँकड़े सीधे अध्ययन क्षेत्र से प्राप्त किए जाएंगे। इसके लिए—

- संरचित प्रश्नावली
- साक्षात्कार अनुसूची
- व्यक्तिगत साक्षात्कार
- प्रत्यक्ष अवलोकन
- क्षेत्रीय भ्रमण
- स्थानीय निवासियों एवं पर्यटन सेवा प्रदाताओं से बातचीत का उपयोग किया जा सकता है।

6. द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक आँकड़े निम्न स्रोतों से प्राप्त किए जा सकते हैं—

- पुस्तकें एवं शोध-पुस्तकें
- शोध-पत्र एवं शोध-प्रबंध
- पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक प्रकाशन
- पर्यटन विभाग की रिपोर्ट एवं प्रकाशन
- सरकारी दस्तावेज
- जनगणना एवं सांख्यिकीय रिपोर्ट
- संबंधित संस्थानों की वेबसाइट एवं आधिकारिक दस्तावेज
- समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ।

7. आँकड़ों का संकलन

चयनित पर्यटन स्थलों का क्षेत्रीय भ्रमण कर स्थल का प्रत्यक्ष अवलोकन किया जाएगा। पर्यटकों एवं स्थानीय लोगों से प्रश्नावली के माध्यम से जानकारी एकत्रित की जाएगी। पर्यटन से जुड़े व्यक्तियों के साक्षात्कार के माध्यम से पर्यटन सुविधाओं, समस्याओं तथा विकास की संभावनाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की जाएगी।

8. आँकड़ों का वर्गीकरण एवं प्रस्तुतीकरण

प्राप्त प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों को व्यवस्थित कर वर्गीकृत किया जाएगा। आँकड़ों को—

- आवृत्ति
- प्रतिशत

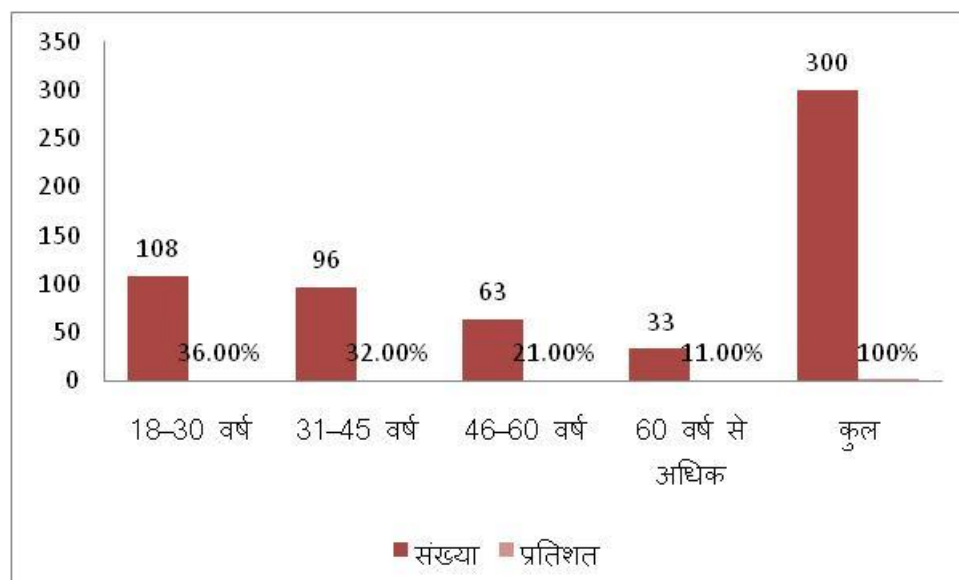
- औसत
- मानक विचलन के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। आवश्यकतानुसार तालिका, बार ग्राफ, पाई चार्ट तथा अन्य उपयुक्त चित्रात्मक माध्यमों का उपयोग किया जाएगा।

आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध कार्य में आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या एक महत्वपूर्ण चरण है। इसके अंतर्गत शोध के दौरान प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों को व्यवस्थित, वर्गीकृत, सारणीबद्ध तथा सांख्यिकीय रूप से विश्लेषित किया जाता है। इसके बाद प्राप्त परिणामों की व्याख्या करके यह समझने का प्रयास किया जाता है कि अध्ययन के उद्देश्यों के संदर्भ में आँकड़े क्या संकेत देते हैं।

तालिका क्रमांक 1. उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर वितरण

आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
18-30 वर्ष	108	36.00%
31-45 वर्ष	96	32.00%
46-60 वर्ष	63	21.00%
60 वर्ष से अधिक	33	11.00%
कुल	300	100%

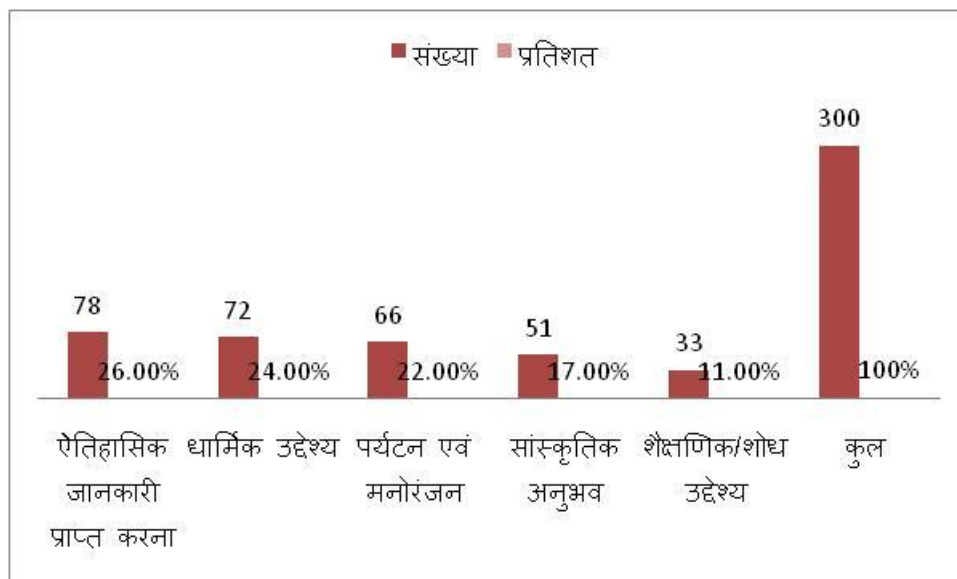


चित्र क्रमांक 1 उत्तरदाताओं की आयु के आधार पर वितरण

व्याख्या: तालिका से स्पष्ट है कि 18-30 वर्ष के उत्तरदाताओं का प्रतिशत सर्वाधिक (36%) है। 31-45 वर्ष के उत्तरदाता 32% हैं। इससे संकेत मिलता है कि ऐतिहासिक पर्यटन में युवा एवं मध्यम आयु वर्ग की भागीदारी उल्लेखनीय है।

तालिका क्रमांक 2 ऐतिहासिक पर्यटन स्थल पर आने का प्रमुख उद्देश्य

उद्देश्य	संख्या	प्रतिशत
ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त करना	78	26.00%
धार्मिक उद्देश्य	72	24.00%
पर्यटन एवं मनोरंजन	66	22.00%
सांस्कृतिक अनुभव	51	17.00%
शैक्षणिक/शोध उद्देश्य	33	11.00%
कुल	300	100%

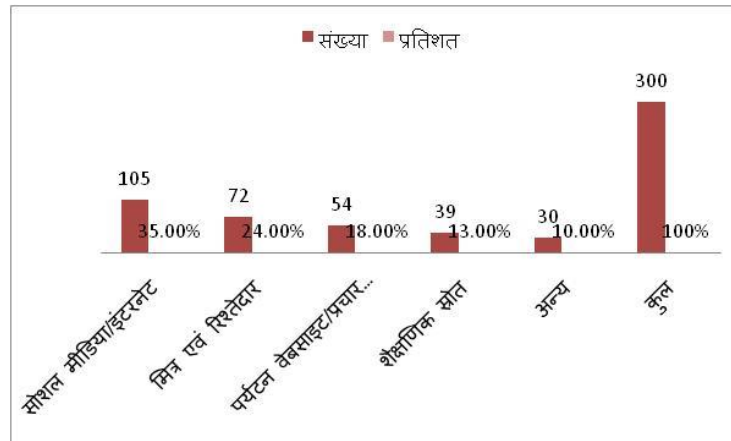


चित्र क्रमांक 2 ऐतिहासिक पर्यटन स्थल पर आने का प्रमुख उद्देश्य

व्याख्या: 26% उत्तरदाताओं ने ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त करने को प्रमुख उद्देश्य बताया, जबकि 24% धार्मिक उद्देश्य से संबंधित हैं। 22% लोग मनोरंजन एवं पर्यटन के लिए आए। इससे पता चलता है कि ऐतिहासिक स्थल केवल धार्मिक पर्यटन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि इतिहास एवं संस्कृति के अध्ययन के लिए भी आकर्षण का केंद्र हैं।

तालिका क्रमांक 3 ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी का स्रोत

जानकारी का स्रोत	संख्या	प्रतिशत
सोशल मीडिया/इंटरनेट	105	35.00%
मित्र एवं रिश्तेदार	72	24.00%
पर्यटन वेबसाइट/प्रचार सामग्री	54	18.00%
शैक्षणिक स्रोत	39	13.00%
अन्य	30	10.00%
कुल	300	100%

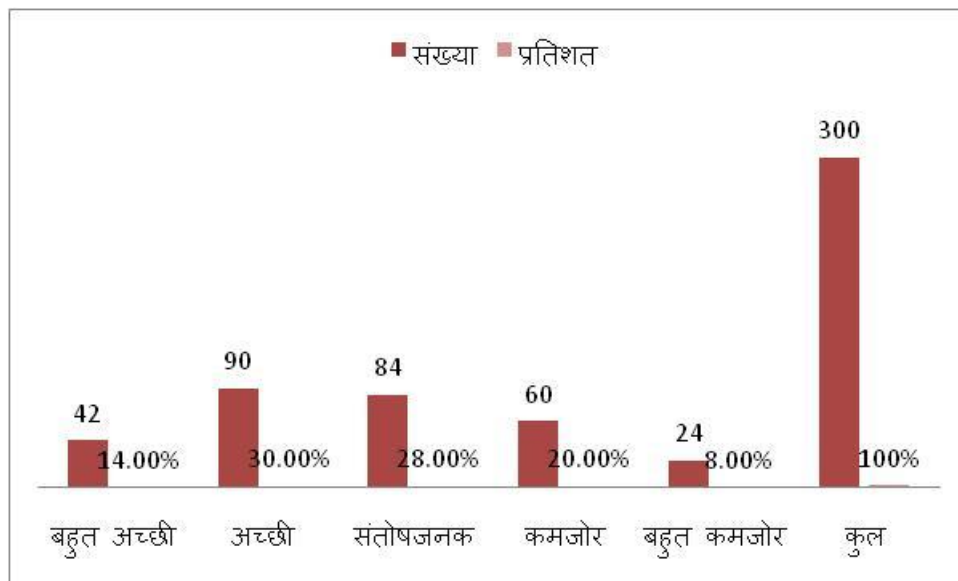


चित्र क्रमांक 3 ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी का स्रोत

व्याख्या: 35% उत्तरदाताओं ने सोशल मीडिया एवं इंटरनेट को जानकारी का प्रमुख स्रोत बताया। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यम ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

तालिका क्रमांक 4 ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण की स्थिति

संरक्षण की धारणा	संख्या	प्रतिशत
बहुत अच्छी	42	14.00%
अच्छी	90	30.00%
संतोषजनक	84	28.00%
कमजोर	60	20.00%
बहुत कमजोर	24	8.00%
कुल	300	100%



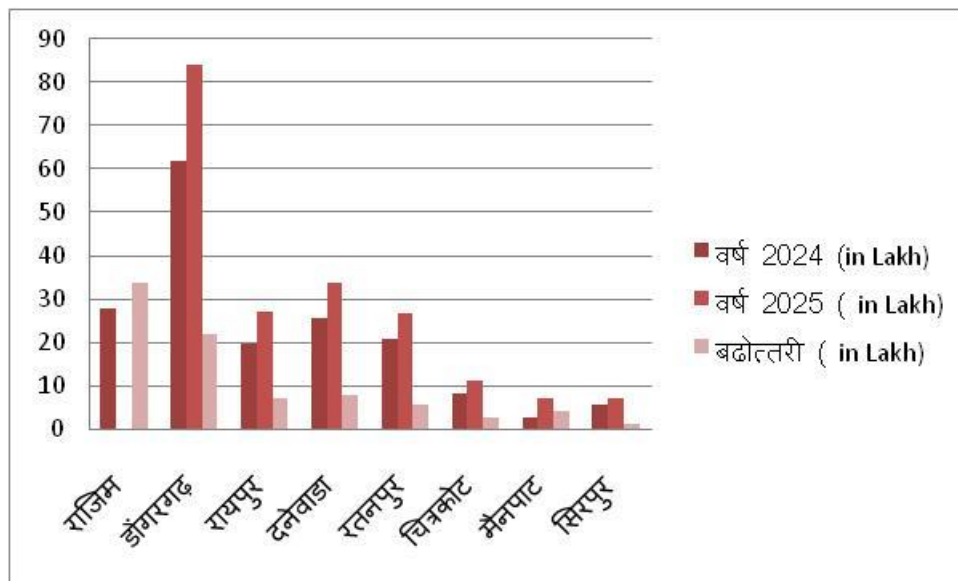
चित्र क्रमांक 4 ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण की स्थिति

व्याख्या: 44% उत्तरदाताओं ने संरक्षण की स्थिति को अच्छी या बहुत अच्छी माना, जबकि 28% ने इसे संतोषजनक बताया। दूसरी ओर 28% उत्तरदाताओं ने संरक्षण व्यवस्था को कमजोर या बहुत कमजोर माना। इससे ऐतिहासिक धरोहरों के नियमित रखरखाव और संरक्षण की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

तालिका क्रमांक 5 प्रदेश के पर्यटन स्थलों का ट्रेड

पर्यटन केंद्र	वर्ष 2024 (in Lakh)	वर्ष 2025 (in Lakh)	बढ़ोत्तरी(in Lakh)
राजिम	28	1.12 Crore	34
डोंगरगढ़	62	84	22
रायपुर	20.10	27.30	7.20
दनेवाडा	26	34	8
रतनपुर	21	27	6
चित्रकोट	8.60	11.40	2.80
मैनपाट	3.10	7.50	4.40
सिरपुर	5.90	7.50	1.60

Source: News Paper



चित्र क्रमांक 5 प्रदेश के पर्यटन स्थलों का ट्रेड

व्याख्या: पर्यटन मंत्री राजेश अग्रवाल का कहना है कि छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलों में पर्यटकों की उतरोत्तर वृद्धि हो रही है, जिससे पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा मिल रहा है, जिसे उक्त ग्राफ के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

समग्र विश्लेषण एवं निष्कर्ष

1. छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों में इतिहास, धर्म और संस्कृति पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण हैं।
2. युवा वर्ग ऐतिहासिक पर्यटन में महत्वपूर्ण भागीदारी रखता है।
3. इंटरनेट और सोशल मीडिया ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी प्राप्त करने का प्रमुख माध्यम बन रहे हैं।
4. सुरक्षा एवं परिवहन जैसी कुछ सुविधाओं के प्रति संतुष्टि अपेक्षाकृत अधिक है।
5. स्वच्छता, पार्किंग और आवास जैसी सुविधाओं में सुधार की आवश्यकता दिखाई देती है।
6. ऐतिहासिक पर्यटन से स्थानीय आर्थिक गतिविधियों और रोजगार को बढ़ावा मिलने की संभावना है।
7. ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए नियमित रखरखाव और प्रभावी संरक्षण व्यवस्था आवश्यक है।
8. स्थानीय समुदाय की सहभागिता को पर्यटन नियोजन में और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

9. प्रचार-प्रसार एवं आधारभूत सुविधाओं की कमी पर्यटन विकास की प्रमुख चुनौतियों के रूप में सामने आती हैं।
10. डिजिटल प्रचार, विरासत संरक्षण, बेहतर सुविधाएँ और स्थानीय सहभागिता छत्तीसगढ़ में ऐतिहासिक पर्यटन के विकास के महत्वपूर्ण आयाम हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. शर्मा, आर. एस. (2005). *भारत का प्राचीन इतिहास*. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. पाण्डेय, जय नारायण (2014). *प्राचीन भारत का इतिहास*. वाराणसी: विश्व विद्यालय प्रकाशन।
3. वर्मा, डी. पी. (2010). *छत्तीसगढ़ का इतिहास एवं संस्कृति*. रायपुर: छत्तीसगढ़ हिंदी ग्रंथ अकादमी।
4. मिश्र, रामचंद्र (2008). *छत्तीसगढ़ का सांस्कृतिक इतिहास*. रायपुर: साहित्य प्रकाशन।
5. शुक्ल, बी. एस. (2012). *छत्तीसगढ़: इतिहास, संस्कृति और पुरातत्त्व*. रायपुर: संबंधित प्रकाशन।